INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 12 | ISSUE - 7 | AUGUST - 2022

रवीन्द्रनाथ टैगोर का शिक्षा में योगदान

डॉ. गोपाल पाल
देवघर महाविद्यालय,देवघर

सारांश

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर से अलग जीन जैक्स रूसो ने सच्ची शिक्षा उसे माना है, जो बालक की अन्तर्निहित शक्तियों को अभिव्यक्ति दें। वह बाल केन्द्रित शिक्षा को महत्व देते थे। प्लेटो की तरह उसे व्यक्ति से अधिक राज्य को महत्व नहीं दिया है। शिक्षा में जनतान्त्रिक भावना का महत्व दिया है। उसने एमील को एक आदर्श बालक तथा सोफी को आदर्श बालिका मानकर रूचि एवं योग्यतानुसार अलग-अलग पाठ योजना तैयार की। आज समाज की यह बहुत बड़ी आवश्यकता बनी हुई है कि वर्तमान समय में लोगों की चित्तवृत्ति को मात्र मशीनी कार्य पद्धति के अनुरूप कार्य करने के लिए तैयार न किया जाय बल्कि उनके द्वारा इस कार्य को परिणीत किया जाय। उनके पीछे प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से आध्यात्मिक सत्ता अवश्य होनी चाहिए। यही चेतनात्मक आध्यात्मिक सत्ता व्यक्ति के आन्तरिक एवं वाह्य व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित करता है। मात्र वाह्य व्यक्तित्व का विकास अपने में पूर्ण नहीं होता और न ही आन्तरिक व्यक्तित्व के विकास को मूलभूत रूप में स्वीकृत किया जाना समीचीन लगता है। एक के अभाव में दूसरे की पूर्णता की परिकल्पना अधूरी एवं अप्रासंगिक प्रतीत होती है।

प्रस्तावना

वर्तमान समय में शिक्षा के सर्वांगीण विकासार्थ रवीन्द्रनाथ टैगोर और जीन जैक्स रूसो के शैक्षिक विचारों की अभिव्यक्ति अत्यन्त आवश्यक, प्रासंगिक एवं औचित्यपूर्ण है। इनके शैक्षिक विचारों की अभिव्यक्ति के आधार पर ही वर्तमान परिवेश में राष्ट्रीय स्तर पर लोगों को विविध आयामों के सापेक्ष विकास करने का अवसर प्राप्त हो सकता है।

इसलिए आज इस बात की अत्यंत आवश्यकता व प्रासंगिकता बन पड़ी है कि आध्यात्मिक पहलुओं से जुड़े शिक्षाशास्त्रियों के शैक्षिक विचारों को क्रमबद्ध रूप प्रदान किया जाए तथा उनका तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया जाए। आधुनिक सदी के महान विचार एवं शिक्षा मनीषियों में सहृदय कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर और जीन जैक्स रूसो का एक स्वतन्त्र चिन्तक एवं विचारक के रूप में महत्वपूर्ण स्थान नियत है। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार सर्वोच्च शिक्षा वही है, जो सम्पूर्ण सृष्टि से हमारे जीवन का सामंजस्य स्थापित करती है। रूसो का शिक्षा दर्शन प्रकृतिवादी है।

उनके अनुसार, "प्रत्येक वस्तु प्रकृति के सृजन से आने पर अच्छी होती है, परंतु मनुष्य के हाथों में आने पर वह विघटित हो जाती है।"

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने भारतीय शिक्षा के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी की भूमिका का निर्वाह करते हुए समाज के सर्वांगीण विकास का मार्ग प्रशस्त किया है। उन्होंने आज के जटिल सांसारिक वातावरण एवं भौतिकवादी युग में वासुधैव कुटुम्बकम् की भावना का जागरण करने के लिए आध्यात्मिक वृत्तियों के विकास में विशेष योग दिया है। उनकी प्रकृतिवादी मानवीय विकास की अवधारणा का मात्र एक ही उद्देश्य रहा कि लोक की उन्नति में ज्ञान-विज्ञान संस्कृति और संस्कार का विशेष योग सुनिश्चत किया जाय। चरित्र की उत्तमता, राष्ट्र के प्रति अनुराग और आध्यात्मिक उन्नति ही मानवीय विकास की सर्वोपरि इकाई है। यह ही जीवन को विशेष क्षेत्र में विकास के लिए उपयुक्त अवसर प्रदान करती है। मनुष्य के द्वारा उसके जीवन से जुड़ी आध्यात्मिक, नैतिक व लौकिक वृत्तियों के परस्पर योग का विश्लेषण गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने अपनी रचनाओं में किया है, जिसकी लोकोन्मुकता व सर्वग्राहयता को प्रस्तुत शोध-अध्ययन की पृष्ठभूमि के रूप में अंगीकृत किया गया है।

शिक्षा एवं शिक्षा के प्रति भारतीय दृष्टिकोण

अतीत काल से शिक्षा के प्रति भारतीय दार्शनिकों का विशेष भाव केन्द्रित रहा है। इन्होने समय-समय पर अपनी दार्शनिक धारणाओं के माध्यम से शैक्षिक गुणवत्ताओं के सम्वर्धन में विशेष योग दिया है। मूलत: देखा जाय तो शिक्षा और दर्शन का अटूट सम्बन्ध रहा है, दोनों एक-दूसरे के सम्पूरक होकर सामाजिक विकास में लोकनिर्माण की प्रक्रिया में संलग्न रहें क्योंकि शिक्षा के बिना दर्शन को समझना दुर्लभ है तो दर्शन के बिना शिक्षा की पराकाष्ठा तक पहुंच पाना आसान नहों। शिक्षाविदों ने शिक्षा को मात्र ज्ञानसंग्रह की प्रवृत्ति तक ही सीमित नहीं रखा है बल्कि इन्होंने इसे विद्या की पराकाष्ठा तक पहुँचाने का प्रयत्न किया है, जिसमें विनयावत् हो नियम संयम के साथ व्यक्तित्व के आन्तरिक एवं बाह्य पक्ष के विकास की प्रवृत्ति पर बल दिया गया है। सभी शिक्षा शास्त्रियों ने भारतीय दार्शनिक धारणाओं को सहजता पर्वूक जनमानस तक पहुंचाने के लिए शिक्षा को ही अपना माध्यम बनाया, सबका मात्र एक ही उद्देश्य रहा कि मनुष्य का सर्वांगीण विकास हो, वह जीवन के एकल पक्ष की उन्नति को ही अपना सब कुछ न समझे बल्कि वह सभी विषयों का समानुपातिक विकास करता रहे। इस दिशा में मानवीय संस्कृति के विकास काल से ही अनवारत प्रयत्न जारी है आज वर्तमान परिवेश में भी इस परम्परा को आगे बढ़ाते रहने का प्रयास किया जा रहा है और एक परिधि में सफलता भी प्राप्त हो रही है।

शिक्षा दर्शन की प्रकृति एवं महत्व

शिक्षा मानव जीवन की एक महत्वपूर्ण इकाई है। इसके बिना मनुष्य का अस्तित्व किसी भी प्रकार से सुरक्षित नहीं है। शिक्षा के द्वारा ही एक मानव सामाजिक एवं सांस्कृतिक ज्ञान का अर्जन कर जगत के विभिन्न प्राणियों से पृथक अपनी सत्ता को कायम करता है। वह नर से नारायणत्व की प्राप्ति के लिये शिक्षा के उपयोगी उपागमों का सदुपयोग करते हुए उन्हें अपने नैतिक जीवन में उतारने का कार्य करता है। शिक्षा की प्राप्ति पूर्णतया दार्शनिक अवधारणाओं से संलिप्त है। यह मात्र वाक्याभिव्यक्ति का उपागम नहीं है, अपितु मनुष्य की आन्तरिक सत्ता से जुडो चेतनात्मक अवस्था के सृजन की मूलभूत प्रक्रिया है। ज्ञान की प्राप्ति के लिए जब मनुष्य अपनी आत्मा से सजग हो सांसारिक विकृतियों का परित्याग कर चेतन सत्ता की महत्ता के वास्ते उन्मुख होता है तब उसकी योजना शिक्षा दर्शन की सार्वभौमिकता का निर्धारण करती है।

फलतः आज शिक्षा के अभ्युत्थानक स्थलों से देश के कोने कोने में बड़े बड़े पदों पर कार्य करने वाले डाक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक, शिक्षक, समीक्षक, समालोचक पहुँच रहे हैं, किन्तु किसी भी पद पर कार्य करने वाला वह मनुष्य नहीं तैयार हो पा रहा है, जो मानव की सर्वांगीण समस्या को भली भाँति समझ सके तथा शिक्षा के अभ्युत्थान में अपना बेहतर योग प्रदान कर सके। ऐसे समसामयिक मानवीय नैतिकता से पोषित मानवीय इच्छा के प्राविधानार्थ रवीन्द्रनाथ टैगोर और जीन जैक्स रूसो के शैक्षिक विचारों की उपादेयता अत्यन्त प्रासंगिक व औचित्यपूर्ण प्रतीत होती है। जब तक इनके शैक्षिक विचारों की उपादेयता को वर्तमान पृष्ठभूमि में संकल्पित हो स्थापित करने का प्रयत्न नहीं किया जायेगा, तब तक शैक्षिक पृष्ठभूमि से जुड़े राष्ट्र व समाज की समस्याओं का निदान सम्भव नहीं है। प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में इसी समस्या के समाधान की आवश्यकता है। अतः प्रस्तुत समस्या का कथन निम्नलिखित है- **रवीन्द्रनाथ टैगोर एवं जीन जैक्स रूसो के शिक्षा दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन एवं वर्तमान परिस्थितियों में उसकी प्रासंगिकता।**

प्रयुक्त शब्दों की परिभाषा

प्रत्येक शोध-प्रबन्ध में किसी निर्धारित समस्या का समुचित समाधान ढूढने का उत्तम यत्न किया जाता है। जबतक समस्याओं का निर्धारण नहीं होता, तब तक उनके समापन की योजना का सुनिर्धारण सहज ढ़ंग से सम्भव नहीं हो पाता। प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में गुरुदेव रवीन्द्र टैगोर एवं जीन जैक्स रूसो के शिक्षा दर्शन की तुलनात्मक अवस्थाओं का कार्यकीय अन्वेषण करते हुए वर्तमान परिवेश में शैक्षिक पृष्ठभूमि में उत्पन्न समस्याओं के निदानार्थ इनकी अवधारणओं के प्रयोग की प्रवृत्ति को विवेचित करने का प्रयत्न किया गया है। इसी क्रम में समस्याओं को रेखांकित करने वाले दो शब्द उभर कर सामने आयें हैं, जिनमें पहला शिक्षा दर्शन है और दूसरा प्रासंगिकता है। इस प्रकार से शिक्षा दर्शन और प्रासंगिकता जैसे निर्धारित प्रमुख शब्दावली का पारिभाषित विश्लेषण निम्नवत् ढ़ंग से किया जा सकता है

शिक्षा दर्शन

दार्शनिक पृष्ठभूमि में शिक्षा के औचित्य को व्याख्यायित करने की सहजतम, सावभौमिक प्रवृत्ति ही शिक्षा दर्शन है। इसके अन्तर्गत शिक्षा के सूक्ष्मतम रूप की आधारशिला एक ऐसी भावभूमि पर रखी जाती है, जिसमें ज्ञान के उस विशिष्ट कोष का सहजीकरण किया जाता है, जिसका वाहय रूप जितना ही सरल हो आन्तरिक रूप उतना ही सहज और सुबोधी भी हो इस प्रकार भावों की अनुभूति के हार्दिक पक्ष को व्याख्यायित करने की सहजतम् प्रक्रिया ही शिक्षा दर्शन कहलाती है, जिसमें अधिगम और संप्रेषण दोनों ही समानुपातिक होता है।

अध्ययन की आवश्यकता और महत्व

प्रस्तुत शोध का क्षेत्र शिक्षा दर्शन है। शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षा दर्शन का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। समस्त शैक्षिक गतिविधियों जैसे शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, अनुशासन, शिक्षक और शिक्षार्थी का स्थान आदि सभी में शिक्षा दर्शन का महत्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि सम्बन्धित क्षेत्र के समस्या के ज्ञान के बिना उद्देश्यों का निर्धारण नहीं हो सकता और उद्देश्यों को निर्धारित किये बिना शिक्षा के इन दायित्वों की पूर्ति दर्शन द्वारा ही सम्भव है। इस प्रकार समान रूप से पाठ्यक्रम छात्रों के केवल मानसिक विकास में ही सहायक न होकर भावात्मक विकास में भी सहायक होता है। इस प्रकार शिक्षा दर्शन का क्षेत्र समस्त शिक्षा के क्षेत्र में अपना अप्रतिम स्थान सुनिश्चित करता है।

वर्तमानकालिक शिक्षा का यह ह्रास राष्ट्र के लिए निश्चित रूप से घातक बना हुआ है। वस्तुतः देखा जाय तो उत्तम शिक्षा के अभाव में राष्ट्रीय अस्मिता, गरिमा व मानवीय मूल्यों को अपूर्णनीय क्षति पहुँचती है। मानव जीवन में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। व्यक्ति एवं राष्ट्र की उन्नति सभ्यता एवं ज्ञान की प्रगति का एक मात्र साधन है। शिक्षा जब तक संसार में मानव का अस्तित्व रहेगा, शिक्षा की प्रक्रिया निरन्तर चलती रहेगी। ऐसे में वर्तमान भारत को गौरवमयी स्वरूप प्रदान करने हेतु आवश्यकता है कि राष्ट्र शिक्षा की स्थिति को समुन्नत व जीवनोपयोगी बनाया जाय, नहीं तो विश्व मानचित्र पर अपनी विशिष्टता के लिए ख्यातिलब्ध राष्ट्र भारत संकटमय होकर दुखपूर्ण अवस्था में समय व्यतीत करने के लिए बाध्य होगा। आज इस बात की महती आवश्यकता है कि उन विद्वानों महान शिक्षा मनीषियों एवं दार्शनिकों के श्रेष्ठतम् शिक्षा दर्शन के मूल्य को समाज के सामने प्रस्तुत किया जाय तथा लोगों के लिए एक अवबोधात्मक स्थिति उत्पन्न की जाय, जिससे राष्ट्र की शिक्षा को मूल्यपरक शिक्षा में परिवर्तित किया जा सके तथा ह्रासमान मानवीय मूल्यों के परपोषणार्थ शिक्षा की सहजतम् उन्नति सम्भव हो सके।

निष्कर्ष –

गुरु रवीन्द्रनाथ टैगोर ने भारतीय शिक्षा के विकास में अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। उन्होनें सामान्य जन को सहजता पर्वूक जीवन व्यतीत करने का समय-समय पर निर्देशन दिया है, क्योंकि जीवन की गति सत्य है, समय के चक्र में वह चलता ही जाता है। जीवन जीने की जिसकी जितनी अद्भुत कला होती है वह उतनी ही प्रवीणता से जीवन के मूल भूत सुखों को अर्जित करने में सफलता हासिल करता है। इसलिए जीवन की कला को सीखने समझने व उस पृष्ठभूमि में पारंगत होने की अनोखी कला का समुचित प्रदर्शन रवीन्द्रनाथ टैगार जी ने अपनी शिक्षा दर्शन में प्रयुक्त किया है, जो भारतीय आदर्शों को स्थापित करते हुए जीवन के यथार्थ एवं मानववादी अद्भुत दृष्टिकोणों के विकास पर सतत् बल देता है। उन्होंने आन्तरिक शुद्धता के साथ-साथ सामाजिक समरसता को जीवन का प्रमुख बतलाया है, जो भारतीय दृष्टिकोण का पक्षधर है।

जीन जैक्स रूसो ने निषेधात्मक शिक्षा में उसने पुस्तकीय शिक्षा, धार्मिक शिक्षा, निश्चित पाठ्यक्रम का सैद्धान्तिक तथा परम्परावादी शिक्षा का विरोध किया। वर्तमान परिवेश में विविध माध्यमों से शिक्षा के अर्जन की प्रविधि अंगीकृत की जा रही है, किन्तु उन सबों में दार्शनिक पद्धति सर्वोपरि है। शायद यही कारण है कि आज तक की शिक्षा के इतिहास में जितने भी शिक्षाशास्त्री हुए हैं, प्रायः सभी दार्शनिक थे और जितने भी दार्शनिक हुए हैं, वे सबके सब किसी न किसी कोण से शिक्षाशास्त्रीय सन्दर्भों के सम्पोषक रहे हैं। ''शिक्षा ही वह लोकाचार की सत्यनिष्ठ अन्वेषणात्मक अवस्था है, जो सामाजिक कर्तव्य के प्रति मानवीय जागरूकता के अतिरिक्त नैतिकता पोषित मानव चरित्र का निर्माण भी सुनिश्चित करती है। शिक्षक को प्रत्येक बालक का अध्ययन करना होगा और यह पता लगाना होगा कि वह प्रगति कर रहा है, वह किस ढ़ंग से पढ़-लिख रहा है।''

संदर्भ –

- सिंह, रवि एण्ड रावत, सिंह सोहन (2013) ने शिक्षा में रवीन्द्रनाथ टैगोर का योगदान
- रवीन्द्रनाथ टैगोर : टुर्वड्स, यूनीवर्सल मैन, एशिया पब्लिशिंग हाउस, 1961-62
- राय एस.एस. (1981), ए स्टडी ऑफ द एजुकेशनल आईडिया ऑफ रवीन्द्रनाथ टैगोर एण्ड देयर रेलीवेन्स थाउट्स एण्ड प्रैक्टिसेस इन एजुकेशन

- बनर्जी शर्मिला (2009) – का पुस्तक Pedagogy in Patha – Bhawan School of Tagore's ShantiNiketan, Shanti Publications, Delhi
- पुष्पनाथन टी. (2013) रवीन्द्रनाथ टैगोर फिलोस्फी ऑफ एजुकेशन एवं भारतीय शिक्षा पर इसके प्रभाव